SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st year **SESSION –** 2021-2023

SUBJECT - Language across the Curriculum C-4

TOPIC NAME – UNIT-1 भाषा के विविध रूप

DATE - 28-01-21

भाषा का विविध रूप

- हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग 1 हजार वर्ष पुराना माना है।
- भाषाओं की संख्या तो अपार है। संसार में कितनी भाषायें हैं, इसका अनुमान लगाना भी असम्भव है।
- भारत जैसे विशाल देश में भाषाओं की विभिन्नता अधिक है। इस दृष्टि से भारत विविधता का राष्ट्र है।
- यह भारत की विशेषता है कि विभिन्नता में भी एकता है।
- यूरोप जैसे उपमहाद्वीप में भाषाओं के आधार पर ही राष्ट्र बने हैं। यूरोप उपमहाद्वीप के प्रत्येक देश की अपनी भाषा है, अर्थात् यूरोप का विभाजन भाषाओं के आधार पर हुआ है।
- भारत में भाषायें क्षेत्रीय तथा प्रादेशिक है; जैसे – बंगला – बंगाल देश, पंजाबी - पंजाब प्रदेश, राजस्थानी - राजस्थान प्रदेश आदि।
- यूरोप में भाषायें राष्ट्रीय स्तर है, जैसे → फ्रेंच – फ्रांस देश, जर्मन - जर्मनी देश, पोलिश - पोलैण्ड देश।

⇒ भाषाओं की शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्वानो ने विभाजन 5 वर्गों में किया

1. प्राचीन भाषा 2. संस्कृत भाषा 3. मातृभाषा 4. राष्ट्र भाषा तथा 5. अन्तर्राष्ट्रीय भाषा।

(1) प्राचीन भाषा :- इसके अन्तर्गत उन भाषाओं को सम्मिलित किया है जो प्राचीन भारत में प्रयुक्त की जाती थीं, परन्तु आधुनिक समय में उनका उपयोग नहीं होता है।

- प्रमुख प्राचीन भाषाएँ – संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश आदि
- बौद्ध ग्रन्थों की रचना पाली में की गई थी परन्तु यह साहित्य प्राचीन हो गया है परन्तु साहित्य मे योगदान का महत्व कम नही है।
- समय परिवर्तन, ऐतिहासिक घटनाओं, क्रान्तियों के परिणामस्वरूप इन भाषाओं का उपयोग प्रायः समाप्त हो गया है।

(2) संस्कृत भाषा :- संस्कृत भारत की सांस्कृतिक भाषा है।

- भाषा ही नहीं अपितु भाषाओं की जननी है। वेद, उपनिषद् तथा महाकाव्य मूल रूप में संस्कृत भाषा में ही लिखे गए।
- संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। दक्षिण की भाषाओं तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और तमिल पर भी इसका अधिक प्रभाव है।

- संस्कृत भाषा का सीधा उत्तर की भारतीय तथा आर्य कुल से है।
- सभी प्रकार के अनुष्ठान तथा संस्कार संस्कृत से ही किये जाते हैं।
- भारतीय जीवन में धार्मिक, सामाजिक, विधि-विधानों और संस्कारों की भाषा संस्कृत ही है।

- आज भी भाषा की सभ्यता और समृद्धिशीलता की दृष्टि से संस्कृत भाषा का द्वितीय स्थान है।
- उत्तर तथा दक्षिण को मिलाने वाली भाषा संस्कृत ही है। ~~संस्कृत~~

(3) मातृभाषा - माता-पिता से सीखी हुई भाषा ही मातृभाषा है।

- बालक माता-पिता से स्थानीय या क्षेत्रीय बोली ही सीखता है, जिसका लेखन में प्रयोग नहीं होता है।
- लिखने की भाषा परिष्कृत होती है। इसी परिष्कृत भाषा के माध्यम से सभी कार्य होते हैं, तथा विद्यालयों में शिक्षण किया जाता है। तथा साहित्य का सृजन भी होता है, इसे मातृभाषा कहा जाता है।
- किसी विशिष्ट प्रदेश या क्षेत्र में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा को प्रादेशिक भाषा कहा जाता है।
- U.P, M.P में मातृभाषा हिन्दी है। विशेष
- बालकों को शिक्षा मातृभाषा से ही दी जानी चाहिए क्योंकि तथ्यों एवं प्रत्ययों को बोधगम्य करना सरल होता है। उच्च-शिक्षा माध्यम भी मातृभाषा होना चाहिए क्योंकि भावों की अभिव्यक्ति करना सहज एवं स्वभाविक होता है।

(4) राष्ट्र भाषा - मातृभाषा के बाद राष्ट्रभाषा का प्रमुख स्थान है।
- प्रत्येक राष्ट्र की एक भाषा होती है, जिसका संविधान में उल्लेख किया जाता है जिस भाषा को देश की अधिकांश जनता बोलती है और समझ लेती है, उसे राष्ट्रभाषा कहा जाता है।
- भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया गया परन्तु प्रादेशिक संकीर्णता के कारण यह सम्भव नहीं हो सका। दुर्भाग्य यह है विदेशी भाषा (अंग्रेजी) को अपनाने में संकोच नहीं है परन्तु हिन्दी को अपनाने में आपत्ति है। जबकि हिन्दी में राष्ट्रभाषा के सभी गुण समाहित है हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे अधिकांश भारत की जनता बोलती तथा समझती है।

- उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा तथा बिहार हिन्दी भाषी प्रदेश हैं,
- परन्तु हिमाचल प्रदेश, गुजरात के कुछ भागों में हिन्दी भाषा का उपयोग निरन्तर किया जाता है।
- भारत के सभी प्रदेशों में हिन्दी भाषा का प्रयोग किसी-न-किसी रूप में किया जाता है। भारत में हिन्दुओं के चार धामों - बद्रीनाथ, द्वारिका, पुरी तथा रामेश्वरम् में सभी दर्शन हेतु जाते रहे हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश हिन्दी भाषी प्रदेश में हरिद्वार, ऋषिकेश, अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन आदि धर्मस्थल हैं। सभी प्रदेशों से इन धर्मस्थलों पर जाते हैं और हिन्दी का व्यवहार होने के कारण सभी हिन्दी सीखना चाहते हैं।
- संस्कृत सीखने का प्रथम सोपान हिन्दी ही भाषा ही है।
- हिन्दी सीखना सरल तथा स्वाभाविक है।

⇒ /राष्ट्रभाषा का आवश्यकता/

1. देशवासियों में परस्पर सम्पर्क तथा विचारों का आदान-प्रदान एक राष्ट्र-भाषा के माध्यम से ही होता है।
2. राष्ट्र-भाषा देश के गौरव और सम्मान का भी प्रतीक होती है।
3. राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का विकास एक राष्ट्र-भाषा की शिक्षा द्वारा सम्भव होता है।
4. भारत जैसे विशाल देश में भाषाओं की विविधता का होना स्वाभाविक है। सभी भाषाओं का आदर, सम्मान तथा विकास किया जाना चाहिए, परन्तु राष्ट्र-भाषा अपने देश की भाषा होनी चाहिए। विदेशी भाषा को राष्ट्रीय स्थान देना एक दासता का प्रतीक है।